International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 16-11-2019; Accepted: 17-11-2019
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 1; January 2020; Page No. 52-53

ग्रामीण स्त्री प्रतिरोधी स्वर 'केशर-कस्तूरी' के सन्दर्भ में

रिनू एलिज़ाबेथ फिलिप
शोधार्थी, कोच्चिन विश्वविद्यालय, कोच्चिन, केरल, भारत

प्रस्तावना

भारतीय पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री एवं स्त्रियों के अधिकारों के लिए कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं है | लेकिन समकालीन सन्दर्भ में शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण स्त्री चिंतन एवं सोच विचार में भी विकास हुआ | यह विकास एवं सजगता शहरों तक सीमित नहीं रहा है, गाँवों में भी देखने को मिलते है | ग्रामीण नारी, पुरुष समाज की शोषणों के विरुद्ध में उठ खड़ी हुई है | शिवमूर्ति ने अपनी कहानी संग्रह 'केशर-कस्तूरी' में इसी सत्य से पाठकों को परिचित कराया है | ग्रामीण जीवन यथार्थ को अपनी कहानियों के माध्यम से व्यक्त करनेवाले समकालीन कहानीकारों में शिवमूर्ति का स्थान महत्वपूर्ण है | उनका कहानी संग्रह 'केशर-कस्तूरी' ग्रामीण जीवन का दस्तावेज़ है | इसमें संकलित सभी कहानियां मुख्यतः उत्तर भारत के ग्रामीण पृष्टभूमि पर लिखा गया है | इसमें वहाँ के ग्रामीण जीवन की विशेषताएं, किसान-मजदूर की समस्याएं, स्त्री जीवन की त्रासदियाँ एवं दलित शोषण देखा जा सकता है |

'केशर कस्तूरी' में चित्रित सभी स्त्री पात्र पढ़ी-लिखी एवं अपने अधिकारों से सतर्क नारी नहीं हैं बल्कि भारतीय गाँवों के सभी दुर्दशाओं को सहन करके पारिवारिक एवं सामजिक संघर्ष में फंसे हुए साधारण निम्न वर्ग के औरत हैं | इसके कारण इन पात्रों के प्रतिरोध का स्वर भी तीव्र है | गरीबी और अभावों के कारण अधिकांश स्त्री पात्र बाल विवाह, बलात्कार, शारीरिक एवं मानसिक शोषण जैसे विषमताओं से गुज़रती हैं | आज भी कदम–कदम पर स्त्रियों के साथ अन्याय, अत्याचार, एवं अमानवीय कृत्य होना आम बात है | घर हो, पंचायत हो, कोर्ट-कचहरी हो या थाना परिसर – हर जगह स्त्री को ही प्रताड़ना, अपमान, और जलालत झेलनी पड़ती है | [1] सामंती सोच, रूढ़ीवादी मानसिकता एवं दकियानूसी विचारधारा आदि के कारण आधुनिक होने पर भी पुरुष समाज स्त्री को दोहरे दर्जे में देखते है | 'कसाईबाडा' की शनिचरी, 'अकालदंड' की सुरजी, 'तिरिया चरितर' की विमली, 'केशर कस्तूरी' की केशर आदि पात्रों के माध्यम से कहानीकार ने ग्रामीण स्त्री जीवन के विविध पहलुओं को बहुत अधिक मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है |

गाँव के सामजिक गतिविधियों में आए हुए सभी परिवर्तन सबसे पहले वहाँ के स्त्री समूह पर प्रभाव पड़ता है | इसमें वहाँ के राजनीति की पृष्टभूमि बहुत बड़ा है | 'कसाईबाडा' में शनिचरी नामक अनपढ़-गरीब मां के माध्यम से पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री शोषण के विभिन्न पक्ष व्यक्त हुआ है | सामूहिक विवाह के नाम पर उनकी बेटी रूपमती को ग्राम प्रधान ने शहर के एक आदमी को वेश्या वृत्ति केलिए बेच दिया है | शनिचरी, बेटी केलिए प्रधान के विरूद्ध अकेले मोर्चा करती है | उन्होंने कहा – मेरे बिटिया वापस कर दे बेईमनवा, मोर फूल ऐसी बिटिया गाय-बकरी की नाईं बेंचि के तिजोरी भरै वाले ! तोरे अंग-अंग से कोढ़ फूटि कै बदर-बदर चूई रे कोढ़िया...| [2] शनिचरी की हत्या से कहानी अंत होती है | लेकिन उनकी प्रतिरोध का स्वर हर पंक्तियों से देखा जा सकता है | वह अपने अधिकारों के प्रति सजग हो गई | लेकिन उनके विरोध की आवाज़ को गाँव के पुरुषसत्तात्मक समाज सत्ता की सहायता से चुप करते थे | विरोधियों को कुचलने केलिए हत्या करने की क्रूर संस्कृति यहां देखा जा सकता है |

'तिरिया चरितर' की विमली के माध्यम से शिवमूर्ति ग्रामीण समाज में स्त्री जीवन का यथार्थ प्रामाणिक ढंग से व्यक्त करते है | 'पंच परमेश्वर' जैसे कहानियों से

परिचित पंचायत एवं ग्रामीण राजनीति के बदले समकालीन समय के दूषित ग्रामीण राजनीति का चित्र इस कहानी में देखा जा सकता है | विमली अपने ससुर के धार्मिक कपट और वासना का शिकार बन जाति है | वह कई दंड भी भोगती है | लेकिन वह पंचायत में बड़ी निर्भीकता से सच का बयान करती है | शोषण के खिलाफ प्रतिरोध करती है | लेकिन ससुर द्वारा बहु का बलात्कार में पंचायत ससुर के पक्ष में फैसला लेता है | विमली पंचायत के निर्णय का शिकार करती है | □ मुझे पंच का फैसला मंज़ूर नहीं |पंच अंधा है | पंच बहरा है | पंच में भगवान का 'सत' नहीं है | मैं ऐसे फैसले पर थूकती हूँ – आ-क्-थू....! देखूं कौन माई का लाल दगनी दागता है | □[3] इसलिए गाँव के पंच उसके सिर में दाग देते हैं | ग्रामीण पचायत के बदलते रूप इस कहानी में देखा जा सकता है |

पितृसत्तात्मक समाज की क्रूरतम विकृतियां 'अकालदंड' की सूरजी के माध्यम से शिवमूर्ति व्यक्त करते है | इलाके के राहत सामग्री बंटवाने वाले सिकरेटरी ने सुरजी को कई बार प्रलोभन से वश करने केलिए कठिन प्रयत्न किया था | पहली बार वह सामान्य ग्रामीण नारी की तरह सोचती है कि- □ सिकरेटरी के खिलाफ इस गाँव में बोलने वाला कौन है ? उल्टे अपने ही 'पत-पानी' से हाथ धोना पडेगा | □[4] लेकिन स्त्रीत्व को महत्व देनेवाली सुरजी धीरे धीरे ज़ोर प्रतिरोध करती है | स्त्री प्रतिरोध के उदाहरण के रूप में सुरजी का चित्रण है | उसके माध्यम से कहानीकार ने ग्रामीण नारी की शक्ति भी व्यक्त किया है | कहानी के अंत में सुरजी ने हंसिया से सिकरेटरी के देह का नाजुक हिस्सा अलग कर दिया तथा अँधेरे में गुम हो गई | यह सुरजी के प्रतिरोध का चरम सीमा है | सदियों से शोषण अनुभव करते हुए तमाम स्त्री का प्रतिरोध यहाँ दर्शाया जाता है |

निष्कर्ष

स्त्री प्रतिरोध का स्पष्ट स्वर संपूर्ण कहानियों में देखा जा सकता है | इन कहानियों के माध्यम से शिवमूर्ति पुरुष समाज के दकियानूसी दृष्टिकोण पर प्रश्न चिह्न डालते है तथा ग्रामीण नारी समाज को प्रतिरोध करने की प्रेरणा भी देते है | 'कसाईबाडा' के ग्राम प्रधान, तिरिया चरितर के पंच एवं 'अकालदंड' के सिकरेटरी के द्वारा ग्रामीण राजनीति के विकृत रूप समझ सकता है | भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति और उनका प्रतिरोध जाहिर करने में 'केशर कस्तूरी' पूर्णतः सफल एवं सक्षम है |

सन्दर्भ सूची

1. अपनी माटी ई मैगज़ीन – **hhtp://www.apnimaati.com/2019/03/blog-post_82.html?m=1**
2. शिवमूर्ति, केशर-कस्तूरी (कहानी संग्रह), दूसरा संस्करण:1994, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 8
3. वहीं, पृ. 143
4. वहीं, पृ. 27